अक्षर

63

अकार

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक

प्रियंवद

उप सम्पादक

जीवेश प्रभाकर

वर्ष:23–अंक:63

मई 2023

यह अंक

https://notnul.com

पर उपलब्ध है ।

एक प्रति	- 50 /- रु.
वार्षिक सदस्यता	- 150/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता	- 200/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 400/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत)	- 600/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 1500/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 2000/- रु.

पत्रिका रजिस्टर्ड डाक अथवा कूरियर से मंगाने के लिये वार्षिक सदस्य कृपया 100/- रुपये (तीन अंक) और जोड़ लें ।

प्रकाशक

अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001

ई मेल - akarprakashan@gmail.com

सम्पर्क :

प्रियंवद

B -204, रतन सैफ़ायर,16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001

ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :

69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)

ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574

आवरण :- जीवेश प्रभाकर

मुद्रक

सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023

कम्पोज़िंग

विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001

सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं । 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं । आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएगें ।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN

Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,

Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012

IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

अनुक्रम

1. **अकथ :** नए वसन्त के नए अग्रदूत -*प्रियंवद* 06

2. **लेख :** स्मृतियों में सिनेमा-1
नन्ही मुट्ठियों के मासूम सपने - *जितेन्द्र भाटिया* 14

3. **आत्मकथ्य :** एक असफल मजदूर नेता और गीतकार का आत्मकथ्य -2 26
'जलेस' की पहली केन्द्रीय कमेटी की कुछ यादें - *कमल किशोर श्रमिक*

4. **संस्मरण :** देवेन्द्र सत्यार्थी के साथ एक दिन - *बलराज मेनरा* 38

5. **कहानी** : सिगार - *राजकुमार राकेश* 50

6. **कहानी** : कैसे? - *रामेश्वर द्विवेदी* *64*

7. **कहानी :** अफ़ीम - *धनेश दत्त पाण्डेय* 80

8. **तिनका-तिनका** : प्रकाशन की परतें और पन्ने - *प्रकाश चंद्रायन* *94*

9. **प्रसंग-अप्रसंग :** लता मंगेशकर - *यशवंत पाराशर* 101

10. **संस्मरण :** छिंदवाड़ा की स्मृतियों में दर्ज विष्णु खरे - *दिनेश भट्ट* 106

11. **ख़ाका :** राजा महदी अली ख़ान - *आयशा आरफ़ीन* 112

12. **किताब** : वर्षावासः उपन्यास नहीं, प्रतिउपन्यास - *धीरेन्द्र अस्थाना* 118

13. **किताब :** शहर के अतीत और वर्तमान से बतकही - *रामशंकर द्विवेदी* 121

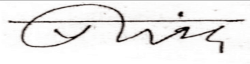

नए वसन्त के नए अग्रदूत

प्रिय राजो उर्फ़ हरिओम राजोरिया,

पेश्तर इसके कि कुछ लोग इस संबोधन की प्रेरणा और निहितार्थ गलत जगह ढूँढें, पेश्तर इसके कि कुछ पूर्वाग्रही दुरभिसंधियों को फलने फूलने का मौका मिले, मैं बता दूँ कि तुमको, (राजो के साथ आप जोड़ने से राजो की ताजगी और तपिश कुम्हला जाती है।) इस सम्बोधन से क्यों लिख रहा हूँ? दरअसल यह हमारी कुदरती फ़ितरत है कि हम जिससे मुहब्बत करते हैं, सबसे पहले उसका नाम छोटा कर देते हैं। पार्वती को पारो, मेहरुन्निसा को मेहरू और लाजवंती को लाजो बना देते हैं। हमारे घरों में या आसपास टुन्नी, मुन्नी, बबलू, टबलू कीड़े मकौड़ों के नाम नहीं, बल्कि बहुतों के जिगर के टुकड़ों के छोटे नाम हैं। जिस दिन 'फैन्टा' कोल्डड्रिंक आया था, मेरे पड़ोसी पनवाड़ी ने अपनी नवजात बेटी का नाम फैन्टा रख दिया। एक और पड़ोसी के यहाँ क्रम से लड़कियाँ पैदा होती रहीं जो अक्सर भें-भें करके रोती थीं। उसने उनके नाम बड़ी भें, मंझली भें, छोटी भें रख दिये। मेरा अपना छोटा नाम क्या है यह बताने में मुझे शर्म आती है। अलबत्ता मेरे बड़े भाई वैसे राजकुमार थे, पर उनका छोटा नाम भोंदू था। मेरी मौसी उन्हें उनकी शादी के मंडप में इसी नाम से बुलाती रहीं। मेरी भाभी को अपने पूरे जीवन 'भोंदू की बहू' कहकर गौरवान्वित करती और खुद होती रहीं। मेरी सबसे बड़ी बहन ने अपने तीन बेटियों के नाम बिब्बो, कूटा और बिया रखे। बेटे का टाटो रखा। मैं आज तक नहीं समझ पाया कि ये नाम उन्होंने क्रोध में रखे या स्नेह के अतिरेक में। कुछ समझदार और सुलझे हुए व्यक्ति अपने बड़े नाम को खुद ही छोटा करके, खासतौर से लेखक या कवि तो जरूर ही, लोगों को कई दुश्वारियों से बचा लेते हैं। सोचो, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अगर 'अज्ञेय' न बनते तो उनके चाहने वालों के लिए कितनी मुश्किल हो जाती? अगर मिर्ज़ा असदुल्लाह खाँ बेग 'ग़ालिब' न बनते, तो कौन उन्हें गाता, कौन याद रखता या फ्रांस्वा मारी अरोई वाल्तेयर न बनता, तो दुनिया या फ्रांस पर क्या बीतती? वैसे भी हमारे खून में छोटा करने की फ़ितरत पुरानी है। हमारी महान सभ्यता में तो यह होता ही आया